प्रेम ही आत्मा का अमिट गुण

- ब्र.कु. शिल्पा,महा.

प्रेम मनुष्य का स्वाभाविक एवं अमिट गुण है। कोई भी मनुष्य आत्मा किसी भी काल में 'प्रेम' के बिना नहीं होती। हाँ, उसका प्रेम पहले शुद्ध होता है, और बाद में विकृत हो जाता है। प्रेम जब देह केन्द्रित होता है, अथवा वासना भोग का रूप ले लेता है, तब उसे 'काम' कहा जाता है; जब वह दैहिक सम्बन्ध में अनुगारात्मक होता है तो उसे मोह कहा जाता है; वह किन्हीं भक्ष्य पदार्थों या धन आदि के प्रति लालसा का रूप ले लेता है तो उसे 'लोभ' कहा जाता है; और जब अन्य देहधारियों तथा पदार्थों से न होकर अपने आप ही से होता है, तब उसे 'स्वार्थ' कहा जाता है। अत: प्रेम तो पतित व्यक्ति में भी होता है, परंतु उस अवस्था में प्रेम की विकृति होने से वह 'विकार' कहलाता है। वास्तव में विकार स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं है, बल्कि वो प्रेम की ही विकृति का, या उससे उपजने वाले परिणाम का दूसरा नाम है।

काम, मोह, लोभ और स्वार्थ के बारे में तो स्पष्ट हो गया कि वो प्यार की विकृति के ही विभिन्न नाम हैं। परंतु देखा जाए तो क्रोध, हिंसा, द्वेष, अभिमान आदि विकार भी प्रेम की ही विकृति के परिणाम हैं या उस विकृति की उपज हैं। क्योंकि क्रोध मनुष्य को तभी आता है जब उसकी काम-वासना, उसकी लोभ वृत्ति, उसकी मोह ममता या उसकी स्वार्थ भावना तृप्त नहीं होती। क्रोध स्वतंत्र रूप से कोई विकार नहीं है, बल्कि काम, मोह, लोभ आदि की पूर्ति न होने का परिणाम है। ऐसी ही स्थिति ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की है। ये कोई स्वतंत्र रूप से विकार नहीं है, बल्कि जब मनुष्य की कोई काम वासना, मोह ममता, लोभ वृत्ति या स्वार्थ भावना की पूर्ति में बाधा उपस्थित करता है तो उसके प्रति दूसरे को ईर्ष्या, द्वेष आदि भाव पैदा होते हैं और उन्हीं में वह अवगुण भी ढूंढ़ने लगता है तथा उन्हीं की निंदा करता है तथा उन्हीं से वैर-विरोध-वैमनस्य करता है। इसी प्रकार अभिमान भी

स्वतंत्र रूप में कोई विकार नहीं है। बल्कि जब मनुष्य की लोभ, लोभादि वृत्तियाँ किसी मात्रा में पुष्ट अथवा तृप्त होती हैं तभी उसको अभिमान होता है। तब वह अपने को बहुत बड़ा मानने लग जाता है।

अगर देखा जाए तो सतयुग के आरंभ से लेकर कलयुग के अंत तक का इतिहास एक लव स्टोरी (प्रेम कहानी) है। सतयुग और त्रेतायुग में प्रेम शुद्ध रूप में होता है। शुद्ध प्रेम के कारण सतयुग की सृष्टि सुखमय है। शुद्ध प्रेम न हो तो सतयुग और कलयुग में कोई अंतर ही नहीं रह जायेगा। त्रेतायुग में प्रेम की शुद्धि की कलायें कुछ कम हो जाती हैं और द्वापरयुग से प्रेम का विकृत रूप होना शुरू होता है।

प्रेम की शुद्धि का दूसरा नाम है 'पवित्रता'। अत: प्रेम की शुद्धि ही दूसरे शब्दों में पवित्रता या निर्विकारिता है और प्रेम की अशुद्धि ही विकार अथवा अपवित्रता है। शुद्ध प्रेम से सभी गुण मानव के जीवन में एक साथ धारण होने लगते हैं और अशुद्ध प्रेम से उसमें अवगुण अथवा आसुरी गुण एक साथ आने लगते हैं। क्योंकि जब किसी के प्रति प्रेम हो तो उसके अवगुण दिखाई नहीं देते और उसके प्रति हम मधुरता, सहनशीलता, त्याग आदि का व्यवहार करते हैं, और जब प्रेम मोह का रूप धारण कर लेता है, तब सहनशीलता, मधुरता, संतोष आदि का अभाव होकर असहीष्णुता, असंतोष और कटुता आदि दुर्गुण पनपते हैं।

अत: इस दृष्टि से देखा जाये तो इस संसार में सभी समस्याओं का मूल 'प्रेम की विकृति' ही है। तब तो आज जब हम कहते हैं कि संसार में प्रेम नहीं रहा, तो वास्तव में हमारे कहने का भाव यही होता है कि पवित्र प्रेम नहीं रहा। क्योंकि काम, मोह, लोभ आदि के रूप में व्यक्तियों तथा पदार्थों के प्रति अपवित्र प्रेम तो होता ही है। सिर्फ शुद्ध प्रेम नहीं होता।

सीढ़ी एक, उतरना भी और चढ़ना भी...!

- ब्र.कु. कविता,पानीपत

मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयो:।
बंधाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम्।

अर्थात् मन ही मनुष्यों के बंधन और मोक्ष का कारण है। जो मन विषयों में आसक्त होगा वह बंधन का तथा जो विषयों से पराङगमुख होगा वह मोक्ष का कारण होगा।

यह सूत्र तो मूल्यवान है, लेकिन नासमझों के हाथ में पड़ कर मूल्यवान से मूल्यवान चीज़ दो कौड़ी की हो जाती है। कोहिनूर भी पत्थर हो जाता है। उपनिषद के ये अमृत वचन जिनके हाथों में पड़े उन्होंने ज़हर कर दिया। सारी बात ही उल्टी हो गई। कुछ का कुछ हो गया। यह पूरा देश उसी पीड़ा को झेल रहा है।

उपनिषद तो बुद्ध पुरुषों के प्राणों से निकले हुए स्वर हैं। यह तो जब वीणा बजी है अनहद की, तब ऐसा अपूर्व संगीत पैदा हुआ है। लेकिन फिर पंडित जब व्याख्या करते हैं तो कमल को कीचड़ में घसीट डालते हैं। कमल यूं तो कीचड़ से ही पैदा होता है, लेकिन कमल कीचड़ ही नहीं है, कीचड़ का अतिक्रमण है। कीचड़ के भीतर जो कीचड़ नहीं है उसकी अभिव्यक्ति है। लेकिन फिर उसे कीचड़ में लथाड़ देना सुन्दर को असुन्दर कर देना है, सत्य को असत्य कर देना है। आज व्याख्याओं ने सत्यों को उभारा नहीं है, निखारा नहीं है, उन पर धार न दी, व्याख्याओं के कारण सत्य की तलवार चमकी नहीं, उस पर और धूल जमी, और जंग जमी।

ऐसा ही इस सूत्र के साथ भी हुआ। इस सूत्र का मौलिक अर्थ बहुत सरल और सीधा है, व्याख्या की जैसे कोई ज़रूरत ही नहीं है। मनुष्य शब्द भी जैसे इस बात को इंगित करता है कि मन ही सब कुछ है। मनुष्य शब्द ही मन से बना है। यूं तो दुनिया में मनुष्य के लिए अलग-अलग भाषाओं में बहुत से शब्द हैं। जैसे उर्दू में आदमी। वह भी प्यारा शब्द है। मगर वह कीचड़ की खबर देता है, कमल की नहीं। आदमी शब्द बनता है मिट्टी से। जो मिट्टी से बनाया गया, ऐसा आदमी का अर्थ है।

यहूदियों में, ईसाइयों में, मुसलमानों में यह कहानी है कि परमात्मा ने मिट्टी का पुतला बनाया और उसमें सांसें फूँक दीं। ऐसे पहले आदमी का, आदम का जन्म हुआ। आदम का अर्थ है: मिट्टी का पुतला। सच है यह बात, लेकिन बहुत अधूरी-अधूरी। यह केवल मनुष्य का बाहरी रूप है। निश्चित ही मिट्टी है आदमी, लेकिन मिट्टी से ज़्यादा भी है। मनुष्य 'मन' है।

अंग्रेजी का शब्द 'मैन' मन का ही रूपांतरण है। वह मनुष्य का ही भिन्न रूप है। दोनों का उद्गम एक ही सूत्र से हुआ है: मन से।

मन का अर्थ होता है मनन की प्रक्रिया, मनन की क्षमता, सोच-विचार की संभावना। मिट्टी तो क्या खाक सोचेगी! मिट्टी तो सोचना भी चाहे तो क्या सोचेगी! कौन है जो मनुष्य के भीतर सोचता और विचारता है? कौन है जो मनुष्य के भीतर मनन करता है? वह चैतन्य है, आत्मा है। इसलिए मन सिर्फ मिट्टी से

- शेष पेज 7 पर...

बुदनी-होशंगाबाद(म.प्र.)। माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सुनिता। साथ हैं ब्र.कु. तुलसा।

बाजीपुरा-गुज.। ईश्वरीय चर्चा करने के पश्चात् कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति तथा अन्य।

बीरगंज-नेपाल। 'शान्ति, खुशी एवं स्वास्थ्य के लिए परमात्म ज्ञान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महानगरपालिका उपमेयर शान्ति कार्की, ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. किरण, न्यायाधीश प्रकाश खरेल, पूर्व सांसद बलवीर चौधरी, ब्र.कु.राम सिंह, ब्र.कु.रवीना, जिलाधिकारी दुर्गादत्त पौडेल तथा अन्य।

रायपुर-चौबे कॉलोनी(छ.ग.)। मासिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम 'ज्ञानांजलि' का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, राज्यपाल के सचिव अशोक अग्रवाल, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. भावना।

मुज़फ्फरनगर-उ.प्र.। चौधरी छोटूराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 'जीवन की सफलता के लिए आत्मविश्वास कैसे बढ़ाएं' कार्यक्रम के समापन पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य नरेश मलिक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू । साथ हैं ब्र.कु. जयन्ती, ब्र.कु. अरविन्द तथा अन्य।

किल्ला पारडी-गुज.। 'खुशी समय की मांग' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए योगा केन्द्र के आचार्य बालू भाई लाड, किशोर भाई गांधी, प्रो. ई.वी. गिरीश, ब्र.कु.पारुल, ब्र.कु. वीनू व अन्य।